International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(1): 73-74

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(1): 73-74
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 28-10-2021
Accepted: 15-12-2021

सरोज देवी
संस्कृत अध्यापिका, रा0 व0 मा0 विद्यालय लूखी, जिला रेवाडी हरियाणा, भारत

Corresponding Author:
सरोज देवी
संस्कृत अध्यापिका, रा0 व0 मा0 विद्यालय लूखी, जिला रेवाडी हरियाणा, भारत

शिक्षा के क्षेत्र में सावित्री बाई फुले का योगदान

सरोज देवी

प्रस्तावना

शिक्षा हमारा अधिकार है। हमारे समाज में कई समुदाय इससे लम्बे समय तक वंचित रहे हैं। उन्हें इस अधिकार को पाने के लिए लम्बा संघर्ष करना पड़ता है। लड़कियों को तो और ज्यादा अवरोध झेलना पड़ता रहा है। प्रस्तुत पाठ इस संघर्ष का नेतृत्व करने वाली प्रातः स्मरणीय एवम् अनुकरणीय महिला शिरोमणि सावित्री बाई फुले के योगदान पर केन्द्रित है।[1]

मानव समाज में स्त्री शिक्षा सदैव चिन्तन का विषय रहा है। 19वीं सदी में स्त्रियों के अधिकारों, अशिक्षा, छुआछूत, सती प्रथा, बाल या विधवा विवाह जैसी कुरीतियों पर आवाज उठाने वाली देश की पहली महिला शिक्षिका को जानते हैं?

जनवरी मासस्य तृतीये दिवसे 1831 तमे खिस्ताब्दे महाराष्ट्रस्य नयागांव–नाम्नि स्थाने सावित्री अजायत।[2]

सावित्री बाई फुले जनवरी 1831 में महाराष्ट्र के सतारा जिले में स्थित नयांगांव नामक छोटे से गांव में पैदा हुई थी। महज 9 साल की छोटी उम्र में पुणे के रहने वाले ज्योतिबा फुले के साथ उनकी शादी हुई। शादी के समय सावित्री बाई फुले पूरी तरह अनपढ़ थी तो वहीं उनके पति तीसरी कक्षा तक पढ़े थे, जिस दौर में वो पढ़ने का सपना देख रही थी तब दलितों के साथ बहुत भेदभाव होता था। उस वक्त की एक घटना के अनुसार एक दिन सावित्री अंग्रेजी की किसी पुस्तक के पन्ने पलट रही थी, तभी उनके पिताजी ने देख लिया वो दौड़ कर आये और पुस्तक हाथ से छीन कर घर से बाहर फेंक दी। इसके पीछे ये वजह बताई कि शिक्षा का हक केवल उच्च जाति के पुरूषों को ही है, दलित और महिलाओं का शिक्षा ग्रहण करना पाप है। बस उसी दिन से सावित्री यह प्रण कर बैठी कि कुछ भी हो जाए वो एक दिन पढ़ना जरूर सीखेंगी।

1848 तमे खिस्ताब्दे पुणेनगरे सावित्री ज्योतिबामहोदयेन सह कन्यानां कृते प्रदेशस्य प्रथमं विद्यालयम् आरभत। तदानीं सा केवलं सप्तदशवर्षीया आसीत्। 1851 तमे खिस्ताब्दे अस्पृश्यत्वात् तिरस्कृतस्य समुदायस्य बालिकानां कृते पृथक्तया तया अपरः विद्यालयः प्रारब्धः। [3]

- **लड़कियों के लिए खोला पहला स्कूल**

सावित्री बाई फुले ने जनवरी 1848 को महाराष्ट्र के पुणे जिले में लड़कियों के लिए देश के पहले बालिका स्कूल की स्थापना की। लेकिन उस दौर में स्कूल खोलना आसान काम नहीं था। सावित्री बाई के इस काम को उच्च जाति के लोगों ने अच्छा नहीं समझा और जमकर विरोध किया, जो उस वक्त लड़कियों की शिक्षा के खिलाफ थे। जब सावित्री बाई स्कूल जाती थी तो लोग उनको पत्थर से मारते थे और उन पर गन्दगी फेंकते थे। उन्होनें समाज के कई ताने भी सुने, लेकिन वह उन चीजों से कभी नहीं रूकी और उन्होनें अपने पति के साथ मिलकर लड़कियों के लिए 18 स्कूल खोले।

- **समाज द्वारा किया गया प्रताड़ित**

जब लोगों को लगा कि इन सब चीजों से ये रूकने वाली नहीं है तब ज्योतिराव के पिता गोविन्दराव पर यह दबाव डाला गया कि ज्योतिराव व सावित्री बाई फुले धर्म के खिलाफ काम कर रहे हैं और इससे उनका सामाजिक बहिष्कार किया जा सकता है। तब गोविन्दराव ने दोनों को समझाने की कोशिश की, लेकिन जब वे नहीं माने तो दोनों को घर से निकाल दिया। लेकिन इसके बाद भी दलित समाज की उन्नति और लड़कियों को पढ़ाने का कार्य नहीं छोड़ा। लेकिन जब इन चीजों से भी बात नहीं बनती दिख रही थी तो फुले दंपति की हत्या करने के इरादे से कुछ गुंडों को उनके घर भेज दिया।

- **समाज की भलाई के लिए किये कई कार्य**

सामाजिककुरीतीनां सावित्री मुखरं विरोधम् अकरोत। विधवानां शिरोमुण्डनस्य निराकरणा सा साक्षात् नापितैः मिलिता।[4]

सावित्री बाई फुले के समय विधवा महिलाओं के सिर मुंडवा दिये जाते थे, गर्भवती विधवा का समाज से बहिष्कार किया जाता था। बाल विवाह, सती प्रथा, छुआछूत, दलित उत्थान और ना जाने कितनी सामाजिक कुरीतियां समाज में प्रचलित थी, इन सबके विरूद्ध सावित्री बाई लड़ी ही नहीं बल्कि सफल भी रही। सावित्री बाई ने गर्भवती महिलाओं के लिए बाल हत्या प्रतिबन्धक गृह भी खोला। इस प्रकार के घर में प्रताड़ित गर्भवती महिलाओं को रखा जाता था। यहां बच्चों को शिक्षा और उज्ज्वल भविष्य दिया जाता था। एक बार फुले ने आत्महत्या करने जा रही एक विधवा ब्राहमण महिला काशीबाई को रोका और उससे वादा किया कि बच्चा होने के बाद वह उस बच्चे को अपना नाम देंगे। तब महिला ने बच्चे को जन्म दिया, जिसे फुले दंपति ने अपना नाम देकर परिवार में पढ़ा–लिखाकर डॉक्टर बनाया।

- **क्रान्तिकारी कदम उठाने वाली पहली महिला बनी सावित्री बाई**

सत्यशोधकमण्डलस्य गतिविधिषु अपि सावित्री अतीव सक्रिया आसीत्। अस्य मण्डलस्य उद्देश्यम् आसीत् उत्पीडितानां समुदायानां स्वाधिकारान् प्रति जागरणम् इति।[5]

सत्यशोधक मण्डल की गतिविधियों में भी सावित्री बडी सक्रिय थी। इस मण्डल का उद्देश्य उत्पीड़ित समुदायों को अपने अधिकारों के प्रति जगाना था। सावित्री बाई फुले को महिलाओं और दलित जातियों को शिक्षित करने के प्रयासों के लिए जाना जाता है। उनके पति ज्योतिराव को बाद में ज्योतिबा के नाम से जाना जाने लगा। वे सावित्री बाई के संरक्षक, गुरू और समर्थक थे। दोनों ने एक दूसरे का बराबरी से साथ निभाया और किसानों और मजदूरों के लिए समस्याओं के लिए संघर्ष किया। ज्योतिबा की मौत के बाद सावित्री बाई ने उनकी चिता को आग लगाई, ऐसा क्रान्तिकारी कदम उठाने वाली पहली महिला थी। उनकी मृत्यु के बाद सावित्री बाई ने पूरी कुशलता के बाद ज्योतिबा के आन्दोलन का नेतृत्व किया। इस दौरान कई ग्रन्थों की रचना भी की। आधुनिक जगत में मराठी भाषा की पहली कवयित्री भी बनी।

- **इस तरह हुई मृत्यु**

जब 1897 में बुलेसोनिक प्लेग महामारी ने नालसपोरा और महाराष्ट्र के आस–पास इलाके को बुरी तरह प्रभावित किया तो साहसी सावित्री बाई और यशवन्त राव ने बीमारी से संक्रमित रोगियों का इलाज करने के लिए पुणे के बाहरी इलाके में एक क्लिनिक खोला। वह इस महामारी से पीड़ितों को क्लिनिक में ले जाती तथा उनका बेटा इस प्रकार के रोगियों का इलाज करता। रोगियों की सेवा करते हुए वह खुद भी इस बीमारी की चपेट में आ गई और 10 मार्च 1897 को सावित्री बाई का निधन हो गया।

निष्कर्ष–

निष्कर्ष रूप में स्पष्ट किया जाता है कि इस प्रकार की वीरांगना समाज में विशेष कुरीति, अन्याय, पीड़ा, संकट आदि का सर्वनाश करने के लिए ही पैदा होती हैं। उनकी कर्मठता एवं समाज सेवा को देखकर मनुस्मृति की कुछ पंक्तियां स्वतः ही प्रकट हो जाती हैं–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।
यतैतास्तु न पूज्यन्ते, सर्वास्तत्राऽफलाः क्रियाः।।[6]

जहाँ स्त्री जाति का आदर–सम्मान होता है, उनकी आवश्यकताओं अपेक्षाओं की पूर्ति होती है, उस स्थान, समाज तथा परिवार पर देवतागण प्रसन्न रहते हैं। जहाँ ऐसा नहीं होता और उनके प्रति तिरस्कारमय व्यवहार किया जाता है, वहां देव कृपा नहीं रहती है और वहां समपन्न किये गये कार्य सफल नहीं होते हैं। आदरणीया सावित्री बाई का यश सूर्यवत संसार रूपी साहित्य में सर्वदा चमकता रहेगा।

सन्दर्भ–

1. रूचिरा, तृतीयो भागः, अष्टमवर्गाय संस्कृतपाठयपुस्तकम्, पृष्ठ संख्या 76
2. रूचिरा, तृतीयो भागः, अष्टमवर्गाय संस्कृतपाठयपुस्तकम्, पृष्ठ संख्या 77
3. रूचिरा, तृतीयो भागः, अष्टमवर्गाय संस्कृतपाठयपुस्तकम्, पृष्ठ संख्या 77
4. रूचिरा, तृतीयो भागः, अष्टमवर्गाय संस्कृतपाठयपुस्तकम्, पृष्ठ संख्या 77
5. रूचिरा, तृतीयो भागः, अष्टमवर्गाय संस्कृतपाठयपुस्तकम्, पृष्ठ संख्या 78
6. मनुस्मृति अध्याय–3, श्लोक 56,